आखर हिंदी पत्रिका ; e-ISSN-2583-0597 खंड 4/अंक 3/सितंबर 2024
Received: 15/09/2024; Accepted: 17/09/2024; Published: 26/09/2024

कल्याण कर्नाटक का चरित्र और दस्तावेज

डॉ. रनजना पाटिल
प्राचार्य,
अक्कामहादेवी महिला महाविद्यालय, बीदर

डॉ. रनजना पाटिल, **कल्याण कर्नाटक का चरित्र और दस्तावेज**, आखर हिंदी पत्रिका, खंड 4/अंक 3/सितंबर 2024, (218-222)

प्रस्तावना : भारत देश को १५ अगस्त १९४७ को आजादी मिली, परन्तु भारत के चार भागों को आजादी नहीं मिली। वे है – १) अवध २) कश्मीर ३) कल्याण कर्नाटक ४) जुना गढ़

कल्याण कर्नाटक के इस प्रदेश को १७ सितंबर१९४८ में आजादी मिलाती है। तात्पर्य यह निजाम संस्थान से सितंबर १९४८ को मुक्त होता है।

१७ सितंबर १९९९ से कर्नाटक में अचानक यह दिन उभर पडा, कर्नाटक शासन की स्वीकृति मिली पर अभी तक उसका सही ढंग से परिपूर्ण ज्ञान नहीं है ।सिर्फ इतना सभी को जानकारी है की निजामने हमारे इलाखे में सत्ता चलाई। हिन्दुओं पर अन्याय किया। स्त्रियों पर अत्याचार हुआ, गर्भवती स्त्रियों को देखते ही उनकी हत्या ही करते थे। क्योंकि और इन्हीं की कोख से जन्म हुए बच्चों के कारण हिन्दुओ की संख्या बढ़ेगी।

जब भी १७ सितंबर का दिन आता है, तो मुझे लगता था, की जिस ढंग से स्वतंत्रता दिन का इतिहास हर विद्यार्थी जानता है, वैसे ही कल्याण कर्नाटक का इतिहास भी हर एक विद्यार्थी परिपूर्ण रूप से जाने।

बीज शब्द :-प्रस्तावना , विषय विवरण, बालुर के बहादुरों का बलिदान ,कल्याण कर्नाटक के कुछ प्रमुख घटनाएँ, निषकर्ष।

विषय विवरण :-स्वतंत्रता आन्दोलन के इतिहास का अर्थ अंग्रेजों जे साथ जो एतिहासिक संघर्ष इस देश की जनता ने महात्मा गांधीजी के नेतृत्व में किया। दुसरे शब्द में इसे यूँ कहा जा सकता है कि अंग्रेजों के अधीनस्थ जो भारतीय प्रदेश था, वहाँ की जनता द्वारा स्वतंत्रता प्राप्ति हेतु जो आन्दोलन किया गया उसका इतिहास बहुत अंशों में आज भी पूरी तरह से जानने का प्रयास नहीं किया गया। भारत के बहुत बड़े हिस्से पर अंग्रजों का

सीधा नियंत्रण था यहाँ की राजभाषा अंग्रेजी थी । ब्रिटिश शासन द्वारा कानून बनाये जाते थे यहाँ अंग्रेजी माध्यम से पढाई नहीं होती थी ऐसी कुल १० रियासते थी । इसमें मैसूर, त्रावणकोर, कोल्हापुर के शाहू महाराज, बड़ोदा के श्री गायकवाड इसके उदाहरण है ।

पंडित नरेन्द्रजी कहते है -``आर्य समाज ने ही अपने प्रसिद्ध सत्याग्रह द्वारा निजाम की तानाशाही का रुख बदलते और शासन को लोकतन्त्रीय अधार पर सुधर लागु करने के लिए विवश किया था ।"

कल्याण कर्नाटक का अपना एक इतिहास है । यह क्षेत्र ऐतिहासिक, धार्मिक, आर्थिक विरासत के लिए प्रसिद्ध है। पूर्व में इसमे कुल चार जिल्हे थे –बीदर, कलबुर्गी, रायचूर तथा बल्लारी ही शामिल थे, परन्तु राज्य सरकार द्वारा नूतन जिल्हे के निर्माण के तहत एप्रिल १९९८ को रायचूर जिल्हे के कोप्पल को विभक्त कर इसे जिल्हे का दर्जा दिया गया और १३ अक्तूबर २००१ को कलबुर्गी जिल्हे से यादगिर को विभक्त कर इसे जिल्हे का दर्जा दिया गया । हजारोंदलित हिंदुओं का ध्मान्तार्ण किया गया, क्योंकि मुस्लिमों की संख्या बढ़ने के लिए । निजाम की जेल के कुछ रोचक प्रसंग हैदराबाद राज्य में निजाम के द्वारा हिंदुओं पर किये गए अत्याचारों को रोककर भारतीय संस्कृति की रक्षा के लिए आर्य समाज ने १९३९ में सत्यागृह किया था । क्षमा न माँगी जेल गए निजाम को पता चलने पर इन छात्रों को अदालत में ले गये । पूछ-ताछ करने पर पता चला की छात्र अमर शहीद स्वामी श्रध्दानन्द गुरुकुल कांगड़ी से आए है, तो छात्रों से पूछे जमानत दोगे,छात्रों ने कहा नहीं । माफी नामा लिखोगे छात्रों ने कहा हरगिज नहीं तो उसने चुचाप लिख दिया हिंदुस्थान के इन बहादुर लड़कों को सजा दी जाय लडके जेल चले गये । श्री मोहम्मद अली जिन्ना का भाषण हुआ, उनके भाषणों से नारायण बाबु मुसलमानी पोषाख में सभा में पहुँचकर सब कुछ सुनकर आये , उनका भाषण सुनकर विक्षुब्ध हो उठे उनकी भाषा से नारायण बाबू के आँखों में खून उतर आया ।``हम हिन्दुओ को मुर्गी की गर्दन की तरह मरोड़ के रख देंगे । गाजर मुली की तरह काट डालेंगे । इन्होंने अपने खून से हस्ताक्षर किया । होनल्ली की लुट, गोरटा का अमानुष हत्याकांड, मुचलम्ब में नरमेध, डोणगाँव के बागी, अटर्गे का जांबाज, खतगांव की सलामी तथा गाँव की लुट, मेहकर का लंका दहन, बालुर के बहदारों का बलिदान गुलबर्गा महोली का रंग, गुरुमिटकल में हिन्दू मुस्लिम दंगा प्रधान मंत्री लायक अली के मुँह पर करारी चपत श्री विनायकराव विद्यालंकार जेल पहुंचे तो स्वामी रामानन्द ने कहा आप भी जेल में ए तो रावसाहेब ने कहा आप सब को मुक्ति करने आया हूँ । और पुलिस एक्शन की समाप्ती पर १७ सितंबर को सभी राजकीय कैदी मुक्त कर दिए गए । सारे देश में इस बयान को लेकर खलबली मच गयी । स्वयं रियासत के अन्दर से ही प्रधान मंत्री लायक अली के मुँह पर यह करारी चपत लगी थी । राज्य में फैली अराजकता के रूद्र रूप संसार के सामने लाकर रखा गया था । तीन ही दिन में अर्थात १३ सितम्बर को पुलिस एक्शन प्रारंभ हो गया और १७ सितंबर को निजाम ने घुटने टेक दिए । आजाद हैदराबाद का भूत सदा के लिये गाड दिया गया ।

कल्याण कर्नाटक की एक गाँव की घटना प्रस्तुत है ।

<u>बालुर के बहदारों का बलिदान</u> :- बालुर एक छोटासा देहात है । सिकिन्दराबाद –परली लोह मार्ग पर स्थित कमाल्नगर से करीब एक मिल के दुरी पर बसा हुआ है । उन दिनों इस गाँव की आबादी 500 के करीब थी । मकानों की संख्या ७०-८० से अधिक न थी । रजाकार दौर में यहाँ के केवल १०-१२ बहादुर मनचले युवकों ने सुबह आठ से शाम के छ: सैट बजने तक आक्रमणकारी रजाकारो को आगे बढ़ने नहीं दिया, और वह भी

प्रमुखतया गोफन (गुलेर) की सहायता से । बालुर के ज्ञानोबा और सदाशिव ढगे गोफन चलानेवालों में से थे । छोटा भाई ज्ञानोबा ढगे गोफन का धनि था । रजाकारों के जुल्म से वे अपने ग्राम की रक्षा करना चाहते थे । किसान दल से अपना संपर्क स्थापित कर रखा था । अगर समय पर उन्हें दल से सहायता मिलती तो वे २५० पुलिस और रजाकार के सशस्त्र दल के लिए भी भारी थे। प्रतिकूल परिस्थिति में भी जिस निश्चय

और दृढ़ता से उन्होने शत्रु से लोहा लिया और प्रसंग आने पर जिस शान से मौत की अगवानी की वह एक अविस्मरनीय घटना है।

पहले दुश्मनों को अपना पानी दिखाओ :

"रहिमन पानी रखिए, बिंन पानी सब सुन।

पानी गए ना उबरै, मोती मानुस चुन"।

ज्ञानोबा ढगे एक ही छ: सात घंटे तक शत्रुओं को गाँव में घुसाने नहीं दिया । अब सावधानी से तुलसीदास पटेल का मकान अन्दर से बंद था । उसके दरवाजे से आग लगा दी गई । पास पड़ोस की लकड़ी भी उसमे झोंक दी गई। सामनेवाली माडी पर पहुँचने के लिए पत्थर की सीढियाँ बनी हुए है । सीढियों से होकर जब रजाकर दुसरे मंजिल के छत पर पहुंचे तो उन्हें घायल ज्ञानोबा ढगे दिखाई दिया । इस प्रकार ज्ञानोबा ढगे आखिरकार शत्रु के हाथ लग गया । "जो होना था सो हुआ" यह कहते हुए जख्मी ढगे ने पानी पीने के लिए माँगा "सुव्वर अब पानी मांगता है; मुँह में ....करो इसके" यह कहकर जाने लगे । राच्चप्पा पटेल का साथ दो । हुकूमत के खिलाप साजिशे करो । सोराज चाहिए तुम सालों को लों अब सोराज का मजा चखो । यह कहते हुए ज्ञानोबा ढगे को २५-३० फिट ऊँचाई से नीचे लगाई हुई आग फेक दिए । इस तरह रजाकारो का अन्याय होता था ।

कल्याण कर्नाटक के कुछ प्रमुख घटनाएँ :-

* सायगांव में रजाकारों के खादर पाशा का खून यशवंतराव ने किया ।

* अटर्गा का सायगांव से प्रयाण

* अटर्गा में रहकर वहीँ पर जंगल में कैम्प शुरू किया गया ।

* कमालनगर की बैठक, राजाराम और तुलसीराम इन दोनों के प्रयासों से हुई ।

* तुकाराम पटेल तादलापुर से वार्तालाप ।

* अटर्गा के जंगल में मानिकराव मुले और अन्य लोगों से मुलाकात ।

* व्यंकटराव मुले चोंचे मिरकल से मुलाकात ।

* होन्नली ग्राम की घटना और भाउराव पटेल से बातचीत ।

* अन्नाराव पाटिल (भाल्की), तुलजाराम राजपूत (हलसी), किशंसिंग रिपु शंकर, इन्चुर पटेल (जवलगा)। यह सभी लोग भाल्की और वादे पर मारे गए।

* एड.शेतकर का बीदर चौबारे के पास रजाकारों ने खून किया।

* भाई श्यामलालजी को बीदर जेल में जहर देकर मार डाला गया।

* मेहकर अग्निकांड में यशवंतराव सायगावकर को गोली लगी।

* डोणगाँव देशमुख, माणिकराव मुले के गाँव पर बलवीर को जिन्दा जला दिया गया।

* फत्तरु रजाकार का बेलूर में अंत हुआ।

* अकबर रजाकार, बेलूर फत्तरु रजाकार, घोडवाडी और हिसमोद्दीन रजाकार वरवटी में खून भाउराव पाटिल होन्नाली और किसंदल वालो ने किया।

* बालुर का अग्निकांड।

* गोरटा ग्राम का अग्निकांड और 200 से अधिक गांववाले मारे गए।

* भीमराव पाटिल, हुपला और अन्य तीन लोगों को रजाकारों ने ज़िंदा जला डाला जिसमें एक औरत भी मारी गई।

* गोपालदेव शास्त्री का कार्य, आर्य समाज के माध्यम से नौजवानों को तैयार करना।

* बीदर के दीवाने सत्याग्रही, श्री गणपतराव नाइ आर्य, तिप्पणा परीट, गुरप्पा सत्याग्रही।

हजारो दलित हिंदुओं का धर्मांतरण किया गया है।

बोलेगाँव पर रजाकार और पस्ता कौम के लोगों ने तुल्शिरम पाटिल और अप्पाराव पाटिल को कड़बी के बणमी में डालकर जिंदा जला दिया।

गुन्जोटी यह पायगा का जिल्हा यहाँ पर आर्य समाजी शहीदों की श्रृंखला बनी।

हुमानाबाद बाँम्ब केस के मुलजिम श्री दात्तुरव गवली, श्री जीनगर, श्री रामचन्द्रजी आर्य, एम्. पि श्री लक्ष्मणराव जी आर्य।

निष्कर्ष :-कल्याण कर्नाटक के चरित्र में यही कहा जाता है की यह दी सभी विद्यार्थियों को स्वतंत्रता दिन जैसे परिचित हो, सरदार वल्लभ भाई पटेल के अनुसार आर्य समाजियों ने पहले ही यह भूमिका न करते तो यह तीन दिन में रजाकारों को हटा न सकते ।

संदर्भ ग्रन्थ सूचि :-

१) हैदराबाद का मुक्ति संग्राम कुछ अज्ञात पृष्ठ 116,आचार्य खंडेराव कुलकर्णी

२) यह धरती है बलिदान की विठलराव आर्य

****